

---

# Shri Bhutaraja Stotram

---

## श्रीभूतराजस्तोत्रम्

---

### Document Information



---

Text title : bhUtarAjastotram

File name : bhUtarAjastotram.itx

Category : deities\_misc, gurudev

Location : doc\_deities\_misc

Latest update : December 30, 2020

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

September 16, 2023

*sanskritdocuments.org*

---



श्रीभूतराजस्तोत्रम्



प्रसादार्थं सदा नारायणभूताख्यमादरात् ।  
वादिराजगुरोर्दूतं भूतराजं नतोऽस्म्यहम् ॥ १ ॥

स्मरतां नियमेनैव भूतभीत्यादिभञ्जनम् ।  
वादिराजगुरोर्दूतं भूतराजं नतोऽस्म्यहम् ॥ २ ॥

गुरोर्दक्षिणभागस्थं भजतां भद्रदं द्रुतम् ।  
वादिराजगुरोर्दूतं भूतराजं नतोऽस्म्यहम् ॥ ३ ॥

भूतैः कर्णविकर्णारख्यैर्युक्तं भूतगणैः सदा ।  
वादिराजगुरोर्दूतं भूतराजं नतोऽस्म्यहम् ॥ ४ ॥

क्रूरं घोरं तथा शूरं धनुःखङ्गादि धारिणम् ।  
वादिराजगुरोर्दूतं भूतराजं नतोऽस्म्यहम् ॥ ५ ॥

प्रतापवन्तं वीराग्र्यं वीरभद्रोपमं हृदि ।  
वादिराजगुरोर्दूतं भूतराजं नतोऽस्म्यहम् ॥ ६ ॥

रक्ताम्बरधरं रम्यपुष्पमालासुशोभितम् ।  
वादिराजगुरोर्दूतं भूतराजं नतोऽस्म्यहम् ॥ ७ ॥

रत्नौघवलयोपेतं मुक्ताहारविभूषितम् ।  
वादिराजगुरोर्दूतं भूतराजं नतोऽस्म्यहम् ॥ ८ ॥

अर्काभाङ्गदसंयुक्तं रत्नकुण्डलमण्डितम् ।  
वादिराजगुरोर्दूतं भूतराजं नतोऽस्म्यहम् ॥ ९ ॥

उत्तुङ्गतुरगारूढं छत्रचामरसेवितम् ।  
वादिराजगुरोर्दूतं भूतराजं नतोऽस्म्यहम् ॥ १० ॥

दिव्यचन्दनलिप्ताङ्गं कस्तूरीतिलकाञ्चनम् ।  
वादिराजगुरोर्दूतं भूतराजं नतोऽस्म्यहम् ॥ ११ ॥

अचिन्त्याद्भुतसन्मूर्तिं किरिटोज्ज्वलमस्तकम् ।  
वादिराजगुरोर्द्वैतं भूतराजं नतोऽस्म्यहम् ॥ १२ ॥  
कुबेरकोशादानीतं दिव्यमौलीन्दुपार्षदम् ।  
वादिराजगुरोर्द्वैतं भूतराजं नतोऽस्म्यहम् ॥ १३ ॥  
मस्तकार्पित तन्मौलिं वादिराजस्य सन्मुनेः ।  
वादिराजगुरोर्द्वैतं भूतराजं नतोऽस्म्यहम् ॥ १४ ॥  
मानेन गुरुणा दत्ते नूपरे दधतं मुदा ।  
वादिराजगुरोर्द्वैतं भूतराजं नतोऽस्म्यहम् ॥ १५ ॥  
तस्माद् गुरोः प्रसादस्य पूर्णपात्रं तपोनिधिम् ।  
वादिराजगुरोर्द्वैतं भूतराजं नतोऽस्म्यहम् ॥ १६ ॥  
रक्षकं महिमासक्तं सदा सर्वत्र सर्वदा ।  
वादिराजगुरोर्द्वैतं भूतराजं नतोऽस्म्यहम् ॥ १७ ॥  
वादिराजगुरोर्द्वैतं भूतराजस्तुतिं सदा ।  
यः पठेच्चिन्तितं क्षिप्रं भवेत्तस्य न संशयः ॥ १८ ॥  
श्रीवादिराजहृत्पद्मसंस्थितं तुरगाननम् ।  
भजामि सततं सर्वविनुतं चित्तशुद्धये ॥ १९ ॥  
॥ इति श्रीभूतराजस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

---

*Shri Bhutaraja Stotram*

pdf was typeset on September 16, 2023

---

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

